उपनिषदों में पर्यावरण व आद्य शक्ति : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

आनंद
डॉ. दिलीप कुमार
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना
ई.मेल –anand201185@gmail.com
अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग ,जगत नारायण लाल कॉलेज, खगौल, पटना,
पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना

सारांश

उपनिषदों में प्रकृति को माता की संज्ञा दी गई है ,अर्थात पर्यावरण नारी शक्ति या आद्य शक्ति का ही स्वरुप है । उपनिषदों में प्रकृति की सत्ता को पर्याप्त मान्यता दी गई है । इसके अनुसार सृष्टि के प्रारंभिक तीन तत्व अग्नि ,जल और पृथ्वी के योग से अन्य पदार्थ उत्पन्न हुए तथा जीव जगत की सृष्टि हुई ,जिसका मूल में उत्पत्तिकर्ता को शक्ति का नाम दिया गया है। पृथ्वी जल,औषध, वायु और पुरुष सब प्रकृति के घटक है। सबकी जननी शक्ति स्वरूपा को माना गया है, जिसका कि वेदों में सावित्री एवं अदिति के नाम से वर्णन हुआ है । वेदांतों में प्रकृति पूजा वास्तव में अगर हम देखे तो वह आद्य शक्ति पूजा ही है। पृथ्वी को नारी शक्ति तथा चेतन को ब्रह्म माना गया है ,इसीलिए प्रकृति को पालक कहा गया है।,क्योंकि यह माता के समान सबका पालन करती है। यदि हम दार्शनिक दृष्टिकोण से भी देखे तो आद्य शक्ति एक प्रकार की ऊर्जा है,जो समस्त चराचर जीव में व्याप्त है। इसके बिना जीवन की कल्पना करना संभव नहीं है यही शक्ति सूर्य चंद्रमा एवं समस्त ब्रह्मांड में व्याप्त है,अस्तित्व का कारण है।

शब्द कुंजी - आद्य शक्ति , पर्यावरण, चेतना, उत्पत्तिकर्ता, वेदांत

परिचय

जीवन के दर्शन और रहस्य पर उपनिषद पुरे विश्व में अनूठे शास्त्र हैं। ये पूरी तरह से वैज्ञानिक हैं, इसलिए उपनिषद में जो भी चर्चाएं हैं वे बहुत ही तार्किक एवं दार्शनिक है। उपनिषदों में नारी को अमृत और परमात्मा का स्वरूप माना गया है। नारी को प्रकृति और सृष्टि की रचयिता के रूप में प्रस्तुत किया गया है। प्राचीन भारत में पर्यावरण संरक्षण वन, वन्य जीवन, और अधिक विशेष रूप से पेड़ों को उच्च सम्मान में रखा गया था। ऋग्वेद ने प्रकृति के साथ घनिष्ठ संबंध पर बल देते हुए जलवायु को नियंत्रित करने, प्रजनन क्षमता बढ़ाने और मानव जीवन में सुधार करने में प्रकृति की संभावनाओं पर प्रकाश डाला। एक पेड़ को विभिन्न देवी-देवताओं का निवास माना जाता है। यजुर्वेद ने इस बात पर जोर दिया कि प्रकृति और जानवरों

के साथ संबंध प्रभुत्व और अधीनता का नहीं बल्कि आपसी सम्मान और दया का होना चाहिए । वैदिक काल में जीवित वृक्षों को काटना प्रतिबंधित था और ऐसे कृत्यों के लिए दंड निर्धारित किया गया था। श्रीमद्भागवत में यह ठीक ही कहा गया है कि जो मनुष्य अनन्य भक्ति के साथ आकाश, जल, पृथ्वी, स्वर्गीय पिंडों, जीवों, वृक्षों, नदियों और समुद्रों और सभी प्राणियों का सम्मान करता है और उन्हें एक हिस्सा मानता है। भगवान के शरीर से परम शांति और भगवान की कृपा की स्थिति प्राप्त होती है।याज्ञवल्क्य स्मृति और चरक संहिता ने जल की शुद्धता बनाए रखने के लिए उपयोग करने के लिए कई निर्देश दिए। वनों और प्रकृति के अन्य घटकों के अलावा, जानवर आपसी सम्मान और दया के रिश्ते में इंसानों के सामने खड़े थे। प्राचीन हिंदू शास्त्रों में पक्षियों और जानवरों के पंखों की सख्त मनाही है। यजुर्वेद में कहा गया है कि कोई भी व्यक्ति जानवरों का वध न करे, बल्कि सभी की मदद करके और उनकी सेवा करके सुख प्राप्त करे-'याल्हवल्क्य स्मृति में कहा गया है कि "जानवरों को मारने वाले दुष्टों को घोर नरक में रहना पड़ता है। (नरक-अग्नि) दिनों के लिए, टी एट-एनिमल के शरीर पर बालों की संख्या के बराबर", विष्णु संहिता में, यह देखा गया है कि "जो अपनी खुशी के लिए हानिरहित जानवरों को मारता है, उसे मृत माना जाना चाहिए जीवन में, ऐसे व्यक्ति को यहां या उसके बाद कोई सुख नहीं मिलेगा। जो किसी भी जानवर को मृत्यु या कैद में पीड़ा देने से रोकता है, वह वास्तव में सभी प्राणियों का शुभचिंतक है, ऐसा व्यक्ति अत्यधिक आनंद का आनंद लेता है"

उपनिषदों में आद्यशक्ति

उपनिषदों में नारी को अत्यंत महत्व प्रदान किया गया है। नारी को शक्ति, ज्ञान और पवित्रता का प्रतीक माना गया है। उपनिषदों में देवी, माता और पत्नी के रूप में नारी की महिमा को उजागर किया गया है। इन शास्त्रों में नारी की सर्वोच्चता, गरिमा और प्रभावशीलता का वर्णन किया गया है। उपनिषदों में नारी को अमृत और परमात्मा का स्वरूप माना गया है। नारी को प्रकृति और सृष्टि की रचयिता के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वेद और उपनिषदों में नारी को 'आदिशक्ति', 'महामाया', 'महामहीश्वरी' और 'महादेवी' जैसे आध्यात्मिक और पवित्र नामों से संबोधित किया गया है। इन ग्रन्थों में नारी को पूर्णता और अनंत शक्ति का प्रतीक माना गया है। नारी की महिमा का वर्णन इस प्रकार किया गया है: "नारी में ही जगत का संपूर्ण रूप निहित है। वह ही जीवन की धारा है, वह ही सर्जन की शक्ति है। नारी ही माता, पत्नी और बहन के रूप में प्रेम और संरक्षण का प्रतीक है।" उपनिषदों में नारी को सर्वोच्च, अद्वितीय और अविनाशी शक्ति का प्रतीक माना गया है। नारी को 'महामात्र', 'जननी', 'जगद्गुरु' और 'सर्वश्रेष्ठा' जैसे विशेषणों से सम्मानित किया

गया है। उपनिषदों में नारी को ब्रह्मा, विष्णु और शिव जैसे देवताओं से भी अधिक महत्वपूर्ण माना गया है। उपनिषदों में कहा गया है कि नारी में ही सृष्टि की रचना होती है और वह ही सृष्टि का अंत करती है। नारी में ही जन्म, पोषण और संरक्षण की शक्ति निहित है। इसलिए नारी को सर्वश्रेष्ठ और सर्वोच्च माना गया है। नारी में ब्रह्मा, विष्णु और शिव की प्रतिमूर्ति मानी गई है।नारी को परम सत्य और परमात्मा का प्रतीक माना गया है उपनिषदों में नारी को सर्वश्रेष्ठ, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ माना गया है। नारी को देवी, माता और जगद्गुरु के रूप में सम्मानित किया गया है। उपनिषदों में नारी की महिमा, गरिमा और प्रभावशीलता का वर्णन किया गया है।

उपनिषदों में शक्तिस्वरूप प्राकृतिक दृष्टिकोण

उपनिषदों में प्रकृति को शक्ति ही माना गया है ,क्योंकि प्रकृति जनानी को कहा गया है। उपनिषदों में प्रकृति को पवित्र और सम्मानित माना गया है। प्रकृति को आध्यात्मिक एवं दार्शनिक ज्ञान का एक स्रोत माना जाता है। उपनिषदों में वर्णित जीवन का चक्र, पुनर्जन्म की धारणा और संसार के साथ मानव के अखंड संबंध को देखा जाता है। उपनिषद मानव और प्रकृति के बीच एक गहरा संबंध स्थापित करते हैं, जिसमें दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। अहिंसा या अहिंसात्मक जीवन जीने की परंपरा उपनिषदों का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है। अहिंसा का अर्थ है सभी जीवों के प्रति दया और करुणा का भाव रखना। उपनिषदों के अनुसार, जब मानव सभी प्राणियों के प्रति अहिंसक दृष्टिकोण अपनाता है, तो वह प्रकृति के साथ संतुलन बना सकता है और पर्यावरण संरक्षण में योगदान कर सकता है। अहिंसा यहां पर स्त्री शक्ति की अभिव्यक्ति है जिसे हम आदिशक्ति के नाम से भी जानते हैं अहिंसा या अहिंसात्मक जीवन जीने की परंपरा उपनिषदों का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है। अहिंसा का अर्थ है सभी जीवों के प्रति दया और करुणा का भाव रखना। उपनिषदों के अनुसार, जब मानव सभी प्राणियों के प्रति अहिंसक दृष्टिकोण अपनाता है, तो वह प्रकृति के साथ संतुलन बना सकता है और पर्यावरण संरक्षण में योगदान कर सकता है। उपनिषद हमें प्रकृति और मानव के बीच एक संतुलित और सामंजस्यपूर्ण संबंध स्थापित करने की प्रेरणा देते हैं। ये हमें प्रकृति के प्रति सम्मान, अहिंसा और आध्यात्मिकता का महत्व समझाते हैं। उपनिषदों की शिक्षाएं हमें टिकाऊ और संतुलित जीवन शैली अपनाने के लिए प्रेरित करती हैं, जो न केवल हमारे लिए बल्कि पूरे पर्यावरण के लिए भी लाभदायक हो सकती हैं। आज के समय में, जब पर्यावरण संकट एक गंभीर समस्या बन गया है, उपनिषदों का ज्ञान हमारे लिए एक मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है।

उपनिषदों में आद्य शक्तिस्वरूप पर्यावरण संरक्षण

उपनिषदों में पृथ्वी को 'माता' के रूप में संबोधित किया गया है, जिसका अर्थ है कि यह मानव जीवन की उत्पत्ति और पोषण करने वाली है। उपनिषदों में पर्यावरण संरक्षण और पारिस्थितिक संतुलन के महत्वपूर्ण सिद्धांत समहूत हैं। ये प्राचीन वैदिक ग्रंथ मानव और प्रकृति के बीच एक गहरी और अभिन्न संबंध की बात करते हैं। यह दस्तावेज़ उपनिषदों के पर्यावरण और पारिस्थितिकी से संबंधित मूल्यों और सिद्धांतों का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। उपनिषदों में प्रकृति और उसके विभिन्न तत्त्वों के प्रति गहरा सम्मान और श्रद्धा व्यक्त की गई है। इन ग्रंथों में वर्णित देवताओं और शक्तियों में से कई प्रकृति से जुड़े हैं, जैसे वरुण, वायु, अग्नि, और पृथ्वी। इन देवताओं और प्रकृतिक शक्तियों का सम्मान और पूजन किया जाता था क्योंकि उन्हें मानवीय जीवन के लिए महत्वपूर्ण माना जाता था।

उपनिषदों में पारिस्थितिकी का वर्णन

उपनिषदों में पर्यावरण संरक्षण और पारिस्थितिक मूल्यों पर गहरा ज्ञान प्रस्तुत किया गया है। ये ग्रंथ मानव को प्रकृति के साथ एक गहरे और आध्यात्मिक संबंध स्थापित करने का आह्वान करते हैं, ताकि वह पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों का सम्मान और संरक्षण कर सके।उपनिषदों में स्थिरता और पारिस्थितिक संतुलन के सिद्धांत को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इन ग्रंथों में बताया गया है कि मानव को प्रकृति के साथ सौहार्दपूर्ण और संतुलित संबंध बनाए रखना चाहिए, ताकि पारिस्थितिक तंत्र का संरक्षण और संवर्धन किया जा सके। उपनिषदों में मानव को अपनी आवश्यकताओं पर नियंत्रण रखने और संयम अपनाने का सुझाव दिया गया है। अत्यधिक उपभोग और लोभ से बचना चाहिए। उपनिषदों में प्रकृति के स्वाभाविक चक्रों और नवीकरण प्रक्रियाओं का वर्णन किया गया है। मानव को इन प्रक्रियाओं का सम्मान करना और उनका अनुकरण करना चाहिए। उपनिषदों में सभी जीवित और अजीवित वस्तुओं की परस्पर निर्भरता पर बल दिया गया है। मानव को इस पारस्परिक संबंध को समझना और उसका सम्मान करना चाहिए। कुछ महत्वपूर्ण पर्यावरण संबंधी उपनिषदों के उदाहरण दिए जा रहे हैं :-

ईशावास्य उपनिषद्: ईशावास्य उपनिषद् में एक श्लोक है जो नारी की महत्वपूर्ण भूमिका को दर्शाता है। श्लोक ११ कहता है: **"यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मन्येवानुपश्यति। सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते।।"** यह श्लोक बताता है कि जो व्यक्ति सभी जीवों में अपने को देखता है, वह उन सभी में अपना आत्मा देखता है और इसलिए किसी से भी नफरत नहीं करता। इस श्लोक से उपनिषद में नारी के समान अधिकार और महत्व का संदेश भी दिया गया है। ईशावास्य उपनिषद् में प्राकृतिक संरक्षण के सिद्धांतों का

उल्लेख किया गया है। इसमें सृष्टि के निर्माता के प्रति आदर और समर्पण का उल्लेख है। उपनिषदों में अत्यधिक उपभोग और लोभ से बचने का आह्वान किया गया है। मानव को अपनी जरूरतों पर नियंत्रण रखना चाहिए और प्रकृति के संसाधनों का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए।

तैत्तिरीय उपनिषद्: तैत्तिरीय उपनिषद् में प्राकृतिक संसाधनों के साथ संतुलन और सामर्थ्य की महत्वपूर्णता पर ध्यान केंद्रित किया गया है। उपनिषदों में प्रकृति के स्वाभाविक चक्रों और पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखने का महत्व बताया गया है। मानव को इस संतुलन को बनाए रखना चाहिए।

छांदोग्य उपनिषद्: च्छांदोग्य उपनिषद् में नारी के उच्च स्थान का वर्णन किया गया है। इसमें नारी को आध्यात्मिक और सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण बताया गया है। छांदोग्य उपनिषद् में प्राकृतिक विकास और संरक्षण के महत्वपूर्ण पहलुओं पर चर्चा की गई है। छांदोग्य उपनिषद् में सभी जीवित प्राणियों के अस्तित्व और उनकी भूमिका को महत्व दिया गया है। मानव को इस जैव-विविधता को बनाए रखना चाहिए।

बृहदारण्यक उपनिषद्: इस उपनिषद् में याज्ञवल्क्य राजा जनक के समाधि के दौरान नारद को नारी के गुणों का वर्णन करते हैं। इसमें नारी की महत्वपूर्ण भूमिका को जिक्र किया गया है। इस उपनिषद् में प्रकृति के अन्यत्र निर्वाह की महत्वता पर विचार किया गया है। बृहदारण्यक में प्रस्तुत स्थायित्व के सिद्धांत आधुनिक पर्यावरण आंदोलन के लिए मार्गदर्शक हैं। इनमें संयम, पुनर्उत्पादन, और पारस्परिक निर्भरता जैसे मुद्दे शामिल हैं।

उपनिषदों में प्रकृति और उसके विभिन्न तत्वों के प्रति गहरा सम्मान व्यक्त किया गया है। यह आधुनिक पर्यावरण आंदोलन के लिए एक प्रेरणास्रोत है।"उपनिषद, वेद के अंतिम भाग, प्राचीन भारतीय दर्शन का एक महत्वपूर्ण घटक हैं। ये ब्रह्मज्ञान और आत्मज्ञान की गहरी खोज करते हैं और हमारे पर्यावरण के साथ मानव के संबंध को समझने में मदद करते हैं। उपनिषद में वर्णित की गई दार्शनिक परंपरा में, पर्यावरण की रक्षा और मानव जीवन का संतुलन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उपनिषदों के अनुसार यह संपूर्ण संसार दो रूपों में विद्यमान है प्रथम चेतना एवं द्वितीय प्रकृति अर्थात गर्भ की आद्या शक्ति जिसे हम स्त्री शक्ति के रूप में भी मानते हैं। उपनिषदों में प्रकृति की सत्ता को पर्याप्त मान्यता दी गई है । इसके अनुसार सृष्टि के प्रारंभिक तीन तत्व अग्नि ,जल और पृथ्वी के योग से अन्य पदार्थ उत्पन्न हुए तथा जीव जगत की सृष्टि हुई ,जिसका मूल में उत्पत्तिकर्ता को शक्ति का नाम दिया गया है।

निष्कर्ष : इस धरती पर कई शास्त्र है ज्यादातर के अनुसार परमात्मा एक पुरुष है लेकिनउपनिषदों में परमात्मा को एक स्त्री के रूप

में माना गया है क्योंकि जिसने भी गहरे में परमात्मा को जाना है उसने यही माना है कि परमात्मा एक स्त्री है इसके पीछे तर्क यह दिया जाता है कि किसी भी चीज के उत्पत्ति के लिए एक बहुत बड़ा गर्भ चाहिए। इतने बड़े सूर्य चंद्रमा और तारों के जन्म के लिए एक बहुत बड़े गर्भ की आवश्यकता होगी और यह जन्म एक स्त्री ही दे सकती है। अतः उपनिषदों मेंपरमात्मा को स्त्री के रूप में माना गया है। उपनिषदों में नारी को सर्वोच्च, अद्वितीय और अविनाशी शक्ति का प्रतीक माना गया है। नारी को 'महामात्र', 'जननी', 'जगद्गुरु' और 'सर्वश्रेष्ठा' जैसे विशेषणों से सम्मानित किया गया है। उपनिषदों में नारी को ब्रह्मा, विष्णु और शिव जैसे देवताओं से भी अधिक महत्वपूर्ण माना गया है। उपनिषदों में कहा गया है कि नारी में ही सृष्टि की रचना होती है और वह ही सृष्टि का अंत करती है। नारी में ही जन्म, पोषण और संरक्षण की शक्ति निहित है। इसलिए नारी को सर्वश्रेष्ठ और सर्वोच्च माना गया है।उपनिषदों में नारी को आदर्श माता के रूप में प्रस्तुत किया गया है। माता का संरक्षण सर्वोच्च माना गया है। माता नारी में परमात्मा का प्रतिनिधित्व करता है।उपनिषदों में नारी को आध्यात्मिक विकास और मुक्ति का आधार माना गया है। नारी के माध्यम से ही मनुष्य को परम सत्य और परमात्मा का ज्ञान प्राप्त होता है।

संदर्भ ग्रंथ

रजनीश,आचार्य (2008)*ईशावास्य उपनिषद* रीगल पब्लिकेशन पुणे।

गीता प्रेस गोरखपुर (2005) *वृद्धारण्यक उपनिषद* गोरखपुर उत्तर प्रदेश।

प्रभुपाद शील (2014) *श्रीमद् भागवत गीता* ,यथारूप इस्कॉन प्रकाशन ,मायापुर। पश्चिम बंगाल।

गैरोला वाचस्पति (2004) *वैदिक साहित्य एवं संस्कृति* ,चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान,नई दिल्ली।

गीता प्रेस गोरखपुर(2019) *श्री दुर्गा सप्तशती* ,गीता प्रेस गोरखपुर प्रकाशन ,गोरखपुर, उत्तर प्रदेश।

भृगु संहिता (2015),संपादक मंडल, मोतीलाल बनारसी दास, मुंबई, महाराष्ट्र।

शास्त्री, माधवाचार्य(1999) *अथर्वेद संहिता* ,चौखंभा प्रकाशन ,दिल्ली।

स्वामी विवेकानंद(1995) *अग्नि -मंत्र*, रामकृष्ण मिशन आश्रम प्रकाशन ,नागपुर, महाराष्ट्र।

रजनीश ,आचार्य(1990) *सर्वसार उपनिषद* ,रीगल पब्लिकेशन ,पुणे, महाराष्ट्र।

गीताप्रेस (1998) प्रश्नोपनिषद ,गीता प्रेस, गोरखपुर प्रकाशन गोरखपुर उत्तर प्रदेश।

उपाध्याय ,बलदेव (2004) वैदिक साहित्य और संस्कृति ,शारदा संस्थान ,वाराणसी ,उत्तर प्रदेश।

द्विवेदी ,पारसनाथ (2017) वैदिक साहित्य का इतिहास ,सुभारती प्रकाशन ,उत्तर प्रदेश।

शिवदत्ता ,रानी (2005) वेदकालीन समाज ,चौखम्बा विद्या भवन वाराणसी ,उत्तर प्रदेश।

https://oshoworld.com/adhyatam-upanishad-by-osho-1-17/

https://m.sahityakunj.net/entries/view/vedon-mein-naari-ki-bhumika

https://www.livehindustan.com/news/editorial/guestcolumn/57-62-80552.html

https://hi.wikipedia.org/wiki. उपनिषद .

https://hindi.speakingtree.in/mythology/upanishad/articleshow/102455651.cms

https://study.com/learn/lesson/the-upanishads-history-religion-oral-tradition.html

https://www.worldhistory.org/article/1567/upanishads-summary--